दिनांक 12 नवम्बर, 1979 को भिंड, मध्य प्रदेश में जनसभा में प्रधान मंत्री श्री चरण सिंह का भाषण।

———————————

किसानो और बहनो,

मुझको अफसोस है कि मुझे यहां आने में घंटा भर लग गया, देर हो गयी और आप लोग इस धूप में बैठे हुए हो, जबकि हवा भी तेज चल रही है। लेकिन यह बात तो मैं शहर वालों के लिए कह सकता था, आप लोगों को तो खेत में काम करना पड़ता है– गर्मी में भी और धूप में भी और ठंड में भी। लेकिन फिर भी मैं माफी चाहता हूं, मेरी वजह से ही आपको यह कष्ट उठाना पड़ा।

मैं देश के कुछ हालात बताने के लिए आपको आया था। अभी जो देश की सबसे बड़ी पंचायत है, जिसका नाम लोकसभा है, उसका चुनाव होने जा रहा है डेढ़ महीने के बाद। आपको यह तय करना है कि किसको वोट देने हैं। तीन दल आपके सामने आयेंगे। एक तो इंदिरा गांधी की पुरानी कांग्रेस, जिसकी वो खुद ही मालिक हैं, उनके नाम के पीछे ही उनके संगठन का नाम है– इंदिरा गांधी की कांग्रेस कहलाती है, उन्हीं की जायदाद है वो; दूसरा जनसंघ वाला एक संगठन है जिसका नाम है – जनता पार्टी, जिसके लीडर हैं हमारे जगजीवनराम जी, जो पहले कांग्रेस में थे और जिन्होंने आपातकालीन स्थिति की घोषणा की थी, इमरजेंसी जिन्होंने लगवायी थी, वो हैं जनता पार्टी के लीडर। और, एक वो कांग्रेसी लोग जो इंदिरा से नाराज हो गये थे कि उन्होंने आपातकालीन घोषणा लगायी और उनको छोड़ के चले आये। वो कहते थे कि इंदिरा को अपनी गलती माननी चाहिए और अपने पाप की माफी मांगनी चाहिए जनता से, जिसके लिए इंदिरा तैयार नहीं थी। चव्हाण वगैरा थे वो लोग इन थोड़े कांग्रेसियों का संगठन। और, एक हमारा भारतीय लोकदल, अब हमने जिसको केवल लोकदल कहना शुरू किया है। एक पार्टी है लोकदल, जिसकी तरफ से मैं आपसे वोट मांगने के लिए आया हूं।

सवाल ये उठता है कि हमें वोट क्यों दी जाये? दूसरों को क्यों नहीं ? मैं आपसे कहना चाहता हूं, अभी मैं जो चार समस्याएं बताने जा रहा हूं, जो देश के सामने हैं, उनका इलाज, उनका समाधान सिवाय हमारे दल के, लोकदल के और किसी के पास नहीं है। –(तालियां) –– वो लोग इलाज कर ही नहीं सकते हैं। वो लोग अगर इलाज करते, तो अब तक देश की यह हालत न होती।

आज देश के सामने चार समस्याएं हैं – एक समस्या गरीबी की है। किसानों और दूसरे दोस्तों, आपको जानकर तकलीफ होगी कि जब इंदिरा गांधी ने चार्ज संभाला था देश का, सन् 66 में, तो उससे पहले साल 64–65 में हिंदुस्तान का नंबर 125 देशों में 85वां था। 84 देश इससे मालदार थे और 40 देश इससे गरीब थे। आठ साल बाद, सन् 73 में इसकी पोजीशन खिसककर हो गयी नंबर 104। 21 देश इससे गरीब रह गये और 103 देश इससे मालदार हो गये। और तीन साल के बाद सन् 76 में जबकि आंकड़े मिलते हैं सबसे ताजा, तो हमारा नंबर 111वां हो गया। आज पोजीशन में हम लोग और भी नीचे खिसक गये। अब 14 ही देश हमसे गरीब हैं। ऐसे देश हैं कि जिनमें से 10–11 के नाम तो आपने कभी सुने

नहीं होंगे। लेकिन वो भी देश, देशों में शुमार हैं। आज 110 देश हमसे मालदार हैं। तो हम लगभग सबसे ज्यादा गरीब हैं लेकिन गरीबी का इतना अफसोस नहीं था। अफसोस इस बात का है कि समय बीतते–बीतते–जैसे समय बीतता जा रहा है, हम और गरीब और गरीब और गरीबतर होते जा रहे हैं। 85, 104 आज 111 और अपने देश में 100 के पीछे 48 आदमी ऐसे हैं जिनको पूरा खाने को नहीं मिलता है। जो गरीबी की रेखा है, उससे नीचे रहते हैं। इनमें कुछ आदमी शहर में भी हैं, बड़े–बड़े शहरों में उन महलों के पीछे, जो हमें दिखायी नहीं देते हैं। तो 48 फीसदी आदमी को तो रोटी पूरी नहीं मिलती है। दूध अंग्रेजों के जमाने में भी कम हो गया था।

मुझको याद पड़ता है, जब मैं अपने हल्के में जाता था, बागपत तहसील है मेरठ जिले की, उसमें छपरौली का हल्का है, जहां से मैं हमेशा चुनके आता रहा हूं सन् 37 से लेकर अब तक, तो एक वहां पंजाब से आया हुआ रिफ्यूजी मिलकियत सिंह, वो हमारे कांग्रेस कमेटी की जीप का ड्राइवर था। दस–बारह दफे मेरे साथ गया। जिस गांव में गये, दूध पीना पड़ता था उनको, और अगर दूध नहीं पीता था, तो नाराज हो जाता था आदमी, वहां का किसान। ये हालत थी उस वक्त। तो, मिलकियत सिंह ने एक दफे मुझसे ये कहा कि चौधरी साहब, माफी चाहता हूं, किसी और ड्राइवर को ले जाइये आप। मैंने कहा क्यों ? बोला कि साहब, दूध पीना पड़ता है सब जगह और हर वक्त इतना दूध पीया नहीं जाता। ये हालत छपरौली की थी, मैं आपको बतलाता हूं। यह बात है अब से तीस साल पहले, 47–48 की। लेकिन आज जब मैं भी छपरौली जाता हूं, 30 साल के स्वराज के बाद, तो आज कोई दूध–वूध पीने के लिए मुझसे भी नहीं कहता है। उस जगह ये हालत हो गयी है दूध की। यही आपके देश का, प्रदेश का हाल होगा। अब दूध हमारे सब लोगों को नहीं मिलता, बच्चों को नहीं मिलता, मरीजों को नहीं मिलता। दवा बनकर रह गया है आज दूध।

ये हमारी गरीबी की हालत है। जहां तक बेरोजगारी की बात है, तो शहर में तो बेरोजगारी है ही पढ़े–लिखे लड़कों की। 1 करोड़ 40 लाख लड़के आज बेरोजगार हैं जिन्होंने कामदिलाऊ दफ्तरों में नाम लिखाया हुआ है। लेकिन वहां की छोड़ो, मैं तो गांव की बात आप को बताना चाहता हूं। गांव से आप वाकिफ हैं। सन् 70–71 में भारत सरकार ने एक गणना की गांव की जमीन की, कि कितनी जमीन कितने लोगों के पास है। क्या उसमें बोया जाता है, कैसी सिंचाई है, सिंचाई का क्या प्रबंध है, वगैरा–वगैरा। सन् 70–71 का एग्रीकल्चरल सेंसस वो कहलाता है। उसकी रिपार्ट के अनुसार 33 किसान ऐसे हैं 100 में, एक तिहाई, जिनके पास दो बीघे से कम जमीन है। सारे देश के आंकड़ों का औसत है। एक–तिहाई किसान ऐसे हैं, जिनके पास दो बीघे जमीन नहीं है, दो बीघे से कम है। 18 ऐसे हैं जिनके पास दो बीघे से ज्यादा, चार बीघे से कम। 19 किसान ऐसे हैं जिनके पास चार बीघे से ज्यादा लेकिन आठ बीघे से कम। 100 में 70 किसान ऐसे हैं जो नाममात्र के किसान हैं, और जिनकी उस जमीन से गुजर नहीं हो सकती दोस्तों।

ये है किसानों का हाल; और मजदूरों की हालत और पहले से ज्यादा खराब हो गयी। अंग्रेज जब गये थे, बल्कि सन् 60 तक, 100 में 17 किसान थे हमारे गांव के अंदर रहने वाले, बल्कि सारे मुल्क में रहने वाले, उनकी तादाद साढ़े 26 हो गयी है। क्यों? क्यों कि जमींदारी खात्मे का नाम उछाला गया और जमीन–वमीन पर वो लगी–सीलिंग वगैरा, तो बड़े–बड़े जमींदारों ने काश्तकारों से जमीन छीन ली। सब मजूदर हो गये। 8 फीसदी मजदूर बढ़ गये,

60 से लेकर 70 तक, दस साल के अंदर। तो साढ़े 26 फीसदी मजदूर हैं, साढ़े 43 फीसदी किसान हैं और उन किसानों में से मैंने बता दिया, एक–तिहाई दो बीघे से कम, 18 दो बीघे और चार बीघे के बीच– 18 फीसदी। और चार और आठ बीघे के बीच 19 फीसदी।

और, जब इनके –साथ शहरवालों का ये हाल है, कि जब मैं अभी वित्त मंत्री हुआ, तो मैंने किसानों के खाद पर जो टैक्स लगा हुआ था, जो दुनिया में कहीं टैक्स नहीं लगता। किसानों के खाद पर टैक्स नहीं, बल्कि अनुदान दिया जाता है। तो सन् 65 में जो हमारे वित्त मंत्री थे, अभी हमने उनको प्राइम मिनिस्टर बनवाया था, मोरारजी देसाई, इन्होंने एक्साइज ड्यूटी लगा दी थी खाद के ऊपर किसानों के। बाहर से गल्ला मंगाते थे और अपने देश के खेतों की पैदावार बढ़ाने का जो सबसे बड़ा साधन था खाद, उस पर टैक्स लगाया था मोरारजी देसााई ने सन् 1965 में। तो मैंने उस टैक्स को आधा कर दिया था। तो शहर के लोगों में बड़ा शोर मचा कि चरण सिंह शहर के लोगों पर टैक्स लगाकर गरीब लोगों पर टैक्स लगाकर गांव के मालदार किसानों को फायदा पहुंचाना चाहता है। झूठा प्रचार। झूठा प्रचार। ये सब बात बेमतलब।

तो, ये बेरोजगारी का हाल है हमारे गांव के बच्चें का। जमीन तो बढ़ेगी नहीं। दादे–परदादों के सामने जो जमीन थी, उसी पर मेंड पर मेंड लगती जाती है और औलाद बढ़ती जाती है और हर एक के हिस्से में थोड़ी जमीन आती जाती है। मैं दूसरों को क्या कहूं ? मुझे आप भी दीख रहे हैं, आपकी शक्ल भी दीख रही है। मैं तो अपने घर की बात कहता हूं कि अब से पचास साल, साठ साल पहले, जो मेरे घर वालों की हालत थी किसानों की। मैं एक मामूली किसान के घर पैदा हुआ हूं, काश्तकार के घर। ऊंची रियासत थी बुलंदशहर की, उनकी जमीन मेरे बाप पर मेरे खानदान वालों पे थी। दस एकड़। तो उस वक्त की मझको याद पड़ती है, मेरे ताऊ, मेरे ताऊ के लड़के जो मेरे भाई लगते थे और सब हमारे बहू–बेटियों, सबके चेहरे पर रौनक, सबकी तंदुरूस्ती अच्छी। गाय–भैंस की भी अच्छी। आज वहीं उनके लड़के, मेरे ताऊ मेरे भाई तो दोनों वहां रहते नहीं, लेकिन जो मेरे ताऊ के पोते और पड़पोते जो मेरे पोते लगते हैं अब, उनकी शक्ल देखता हूं तो मुर्दा, काला रंग, जिस्म में कोई ताकत नहीं, चेहरे पर रौनक नहीं, कपड़े अच्छे पहनने को नहीं मिलते, पीने को दूध नहीं मिलता। क्यों? क्योंकि जमीन अब दो–दो एकड़ रह गयी है बजाय दस एकड़ के। तो यही गांव की सारी व्यथा है। और इस पर कहता है शहर वाला कि मालदार किसानों को फायदा पहुंचाना चाहता है चरण सिंह खाद की कीमत कम करके।

.....

आदमी दस्तकारी में लगा हुआ था। कपड़े बनाता था, साबुन बना लेती थीं घर की बहू–बेटियां, दियासलाई बनाते थे, जूता वहीं बनता था। हजार काम होते थे हाथ से, दस्तकारी में। दस्त माने हाथ, जो हाथ से काम किया जाये। हस्तकला भी कहते हैं हिन्दी में। तो अंग्रेज जब आया था तब 25 फीसदी किसान और भी काम करते थे। हमारे यहां ढाका की मलमल मशहूर थी दुनिया में। वो किसान बनाता था अपने खाली वक्त में। खेत में काम किया और खाली वक्त में कपड़ा बनाया। वह कपड़ा इंगलिस्तान में जाता था और इंगलिस्तान के लोग अपने इस मुल्क के बने हुए कारखाने के मुकाबले में हिंदुस्तान के बने हुए हाथ के कपड़े को पंसद करते थे और खरीदते थे। तो दूसरे रोजगार थे। अब दूसरे रोजगार सब खत्म हो गये। किसानों की तादाद पहले 60 थी 100 में, वो 72 हो गयी और दस्तकारों की तादाद 25

थी, अब सब कारखाने में लगे हुए हैं, अब थोड़े–बहुत दस्तकार बचे हैं, उनकी तादाद मिलकर कुल 9 रह गयी। 25 से 9, 60से 72, देश गरीब हो गया। बावजूद लाखों मोटरकारों के, जो बड़े–बड़े शहर में बड़े–बड़े लोगों के पास हैं केवल। फ्रिज जिसमें सामान रखा जा सकता है। अगर गर्म चाहते हैं तो गर्म रहेगा, ठंडा चाहते हो ठंडा रहेगा, ऐसी मशीन होती है। और ये रेडियो और टेलीविजन सेट, और गगनचुंबी बड़ी–बड़ी इमारतें बनी हुई हैं– दिल्ली में, बंबई में। बावजूद इन सबके, 200 वर्ष पहले जब अंग्रेज आया था, आम हिंदुस्तानी, औसत हिंदुस्तानी उस वक्त मालदार था, खुशहाल था, बनिस्बत आज के, 65 हजार फैक्टरी लगने के बावजूद। तो बेरोजगारी फैलती जा रही है।

तीसरी बात यह कहना चाहता हूं दोस्तों, कि गांव की उपेक्षा की गयी है। गांव की तरफ से गफलत हुई है। गवर्नमेंट तो बनी है तुम्हारे वोटों के बल पर, लेकिन नेतृत्व रहा है शहर के लोगों के हाथ में। हुकूमत रही है शहर के लोगों के हाथ में, बिना तुम्हारे वोट के कोई गवर्नमेंट बन नहीं सकती है – दिल्ली में या भोपाल में। लेकिन जिनके हाथ में हुकूमत रही है, बागडोर रही है, जिनके हाथ में नीतियां बनानी रही हैं, वो महलों में पैदा हुए थे। उन्होंने गरीबी नहीं देखी थी, वो छप्पर के नीचे नहीं पैदा हुए थे। उन्होंने गाय–भैंस नहीं देखी थी, उन्होंने कच्चे कुंए नहीं देखे थे। उन्हें क्या मालूम ? नेकनीयत, देश के लिए कुरबानी की हमारे बहुत– से नेताओं ने, देश को उठाना चाहते थे, लेकिन जैसा गांधी जी कहते थे– रीयल इंडिया लिव्स इन दि विलेजेस नाट इन बाम्बे, देहली और कलकत्ता– असली भारत गांव में रहता है, दिल्ली बंबई में नहीं रहता। असली भारत को दिल्ली और बंबई वाले लोग जानते नही थे। उन्होंने गरीबी कभी देखी नहीं थी। उनकी बहू–बेटियां सेज से कभी उतरती नहीं थीं। उन्होंने तकलीफ क्या जानी थी ? वो कहां खेत पर रोटी लेकर गयी थीं किसानों के लिए ? तो, इसलिए गांव की उपेक्षा होती रही।

नतीजा ये हुआ कि गांव और शहर का पहले भी बहुत फर्क था, आमदनी का। अब वो दुगना हो गया। मुझे याद है, अब तक स्वराज होने के बाद और स्वराज होने से पहले सन 1937 में, मैं एम0एल0ए0 होके आया था विधानसभा यू0पी0 में। मैंने एक लेख लिखा था कि किसान के बेटों को 60 फीसदी नौकरी मिलनी चाहिए कम से कम– कम से कम। (तालियां) उस वक्त, सन् 37 की बात को मैं कहता हूं आपको दोस्तों! लेकिन, मेरी बात को कौन सुनने वाला था ? किसी ने उस बात को नहीं सुना।

तो सारी हुकूमत जो रही है, वो शहर वालों के हाथों में। कहता हूं नेक नीयत वाले के पास, लेकिन उन्हें गांव का क्या पता था ? बड़े–बड़े अफसर भी आमतौर पर बड़े–बड़े शहरों में पैदा हुए हैं। मझे माफ करेंगे, ये खड़े हैं इधर–उधर, कुछ होंगे गांव के भी लोग। लेकिन जिनके हाथों नीतियां बनाना, जो सेक्रेटरी हैं, जो फाइलों पर हुकुम लिखते हैं, उन्होंने गांव देखा नहीं। एक अर्थशास्त्री हुए हैं हमारे बहुत महशहूर डा0 .... लखनऊ के। उन्होंने किताबें लिखी हैं कई गांव के ऊपर लिखी हैं। लेकिन सारी उमर तक गांव नहीं देखा था और गांव के ऊपर किताबें लिखी थीं उन्होंने। ऐसे लोगों के हाथ में ये देश की बागडोर रही। लेकिन उन्हें देश की समस्याओं का ज्ञान नहीं था, इसलिए देश की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

हां, तो मैं यह कह रहा था, जो बात भूल गया था। सन् 37 में मैंने एक लेख लिखा था कि 'इंडिया इज टू वर्ल्डस' – उसमें मैंने एक फिकरा ये लिखा था– हिंदुस्तान दो दुनिया है – एक दुनिया गांव की, दूसरी दुनिया शहर की। यूं समझते थे अंग्रेजों के जमाने में, महात्मा

के नेत्त्व में थोड़ा–बहुत काम करते थे देश के लिए कि अंग्रेज को निकालने के बाद गांव और शहर की जो खाई है इसको पाटेंगे। गांव वालों के कष्टों को मिटाने की कोशिश करेंगे। बड़े–बड़े सेठों को नहीं बढ़ने देंगे।

लेकिन दोस्तों, हमारे सारे जो अरमान थे, सपने, सब भंग हो गये। गांव और शहर की आमदनी का जो फर्क था वो दूना हो गया बनिस्बत अंग्रेजों के जमाने के। तुममें पढ़े–लिखे लड़के बैठे होंगे, नोट कर लेना मेरी बात को। सन् 50–51 में अगर एक गांव वाले की आमदनी या किसान की आमदनी 100 रूपये थी, तो शहर वाले की आमदनी या किसान के अलावा दूसरा पेशा करने वाले की औसत आमदनी 178 रूपये थी। 100 और 178 का फर्क था तब, अंग्रेज गये जब। सौः पौने दो सौ, मोटा–सा समझो। और, 77–78 में वो फर्क हो गया 100 और 346। गांव वाले की आमदनी 100, शहर वाले की आमदनी 346–350। पहले एक और पौने दो का फर्क, अब एक और साढ़े तीन का फर्क है।

गांव में न सड़कें हैं उस तरीके से कि हर गांव में सड़क हों, ना अस्पताल हैं। बीमार हो जाये आदमी तो भिंड जाये या ग्वालियर जाये। स्कूल जो हैं वो रद्दी किस्म के हैं। और कोई सहूलियत नही है। और सोचो, सब बातों को छोड़ो, हमारी बहू–बेटियों के लिए शौचालय का भी इंतजाम नही है। उनको नंगे, शर्म छोड़कर सड़कों पर बैठना पड़ता है, दोस्तों ! क्यों ? सड़कों में जाओ शाम को कभी, बैठी हैं बेचारी, क्या करें ? लड़के तो अन्दर चले जायेंगे, जवान आदमी, पुरूष अंदर चला जायेगा जंगलों में; ये बेचारी कहां जायें? तो मैंने कहा कि मैं तो छप्पर के नीचे पैदा हुआ हूं। मैंने अपनी माता को भी देखा है, अपनी बहनों को भी देखा है, सुबह की बजाय रात को जाती थीं, शौच। यही आपके यहां हाल होगा। क्यों ? तीस साल हो गये स्वराज को। शहरों की रौनक बढ़ गयी, जिसकी कोई सीमा नहीं, लेकिन हमारी बहू–बेटियां जो गांव में हैं, उनके शौच का भी कोई इंतजाम नहीं। छोड़ो लड़कों का, ना इंतजाम करते, लेकिन लड़कियों का तो इंतजाम कर देते। इसका कारण केवल एक है कि जिनके हाथ में सत्ता रही है देश की, उनकी बहू–बटियों को बाहर नहीं जाना पड़ता था। उनके लिए फ्लश का इंतजाम था। लिहाजा तुम्हारे लिए इंतजाम कैसे होता दोस्तों ? (तालियां) तो ये गांव की और शहर की जो तुलना है, वो मैंने की।

फिर अंग्रेज जब यहां थे तो छोटे–मोटे काफी सेठ पैदा हो गये थे। पहले जमाने में नहीं थे, जब हिंदुस्तान आजाद था। हम ये चाहते थे कि सेठों की तादाद को कम करेंगे, उनकी संपत्ति कम करेंगे। ये भी उल्टा हुआ। सेठों की तादाद बढ़ गयी। और दो सेठों का आपने नाम सुना है। मैं बताये देता हूं कि उनकी कितनी जायदाद बढ़ी। टाटा है, टाटा का नाम सुना होगा, 116 करोड़ रूपये की जायदाद थी जब अंग्रेज गया। आज 1100 करोड़ की है। 116 और 1100 करोड़। और एक बिरला का नाम सुना होगा। उस वक्त तो टाटा से आधा ही था, – 53 करोड़ था, आधे से भी कम, उसकी जायदाद भी 1100 करोड़ थी, 19–गुना मालदार हो गया।

एक तरफ किसान और शहर का फर्क पौने दो की बजाय साढ़े तीन गुना हो गया और बिरला की जायदाद बीस–गुना बढ़ गयी। ये हुआ स्वराज में। गरीबी बढ़ती जाती है, बेरोजगारी बढ़ती जाती है, गरीब–अमीर का फर्क बजाय कम होने के बढ़ता जाता है।

और, चौथी बात, जो सबसे ज्यादा दुःखदायी है, गरीबी भी भुगती जाती थी, शख्ती भी, बेरोजगारी भी, लेकिन बेईमानी भी बढ़ती जाती है देश के अंदर, भ्रष्टाचार बढ़ता जाता है। हर

आदमी करीब–करीब बेईमान हो गया है। राज कर्मचारी छोटे–मोटे अंग्रेजों के जमाने में भी बेईमान थे। हम सोचा करते थे कि स्वराज मिलेगा तब बेईमानी को मिटायेंगे, कोई रिश्वत नहीं ले पायेगा गांव वाले से, शहर वाले से, किसान से।

लेकिन दोस्तों, ठीक उल्टा हो गया। राज–कर्मचारियों में भी रिश्वत पहले से बढ़ गयी। लेकिन मैं इसके लिए राज–कर्मचारियों को इतना दोष नहीं दूंगा। असल जिम्मेदारी राजनीतिक नेताओं की है। जिनको आप लीडर समझते हैं, वो लखनऊ में और भोपाल में और दिल्ली में जाकर रिश्वत लेते हैं दोस्तों, असल बात यह है। –– (तालियां) – जब लीडर रिश्वत लेगा, जब मिनिस्टर रिश्वत लेगा, जब गृहमंत्री रिश्वत लेगा, जब चीफ मिनिस्टर रिश्वत लेगा, जब प्राईम मिनिस्टर अगर रिश्वत लेगा या बड़े सेठों से इलेक्शन लड़ने के लिए रुपया लेगा, तो फिर अफसरों को कौन रोकने वाला है? कौन रोक सकता है ? (तालियां) तो सार ––––

मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ इस बात की है और वो पांचवीं बात है, कोई समस्या तो नहीं है खास– कि जब मेरी पीढ़ी के लोग, मैंने सन् 1919 में हाई स्कूल पास किया था मेरठ के गवर्नमेंट हाईस्कूल से। महात्मा गांधी ने देश की बागडोर तभी संभाली थी। अंग्रेजों से बगावत करने के लिए कांग्रेस की बागडोर उन्होंने संभाली थी। तो उस वक्त मेरी पीढ़ी के जो लड़के थे, स्कूल और कालेज में पढ़ते थे, महापुरूषों के नाम हमारे सामने थे। स्वामी दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद – ये सन्यासी लोग थे, महात्मा लोग, जिनकी हम जीवनी पढ़ते थे, जिनकी किताबें पढ़ते थे। राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गांधी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, पंडित मालवीय जी, लाला लाजपतराय, गोपाल कृष्ण गोखले, चितरंजनदास– ऐसे–ऐसे महापुरूष जिन्होंने जीवन झोंक दिया था देश को आजाद करने के लिए। तो वो हमारे सामने आदर्श थे। उनकी नकल करने की हम लोग उस उमर में कोशिश करते थे। सादा जीवन और ईमानदार रहने की और देशप्रेम की कहानियां पढ़ना और उनसे खुश होना और बन सके तो कुछ कुरबानी करना।

लेकिन आज जो स्कूल और कालेज में लड़के पढ़ते हैं यहां भिंड में या ग्वालियर में, उनके सामने कोई आदर्श है? ये बच्चे किसको बनायेंगे अपना आदर्श, किसकी नकल करेंगे ? इंदिरा की नकल करेंगी क्या हमारी बहू–बेटियां, जगजीवनराम की नकल करेगा कोई। जगजीवन राम आदर्श पेश करते हैं? मोरारजी और कांतिभाई की कोई नकल करेगा क्या ? अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन से कोई हमारा नौजवान सीखेगा कुछ? और चंद्रशेखर साहब से कोई कुछ सीखेगा ? या बहुगुणा से कोई सीखेगा ? ये आज आदर्श हैं। मुझे सब सबब –––

फिर दोहराता हूं, देश की सबसे बड़ी बदकिस्मती है, जबकि उसके जवानों के दिल में कोई आदर्शवाद न रह जाये और कोई सामने आदर्श का कोई आदमी न रह जाये, जिसकी वो नकल करना चाहें, वो देश डूब जाते हैं, और हिंदुस्तान डूब चुका है, दोस्तों! यह समुद्र में डूबने जा रहा है, बल्कि दौड़ के कोहली भर लो, बचाओ। वो डूब चुका है। उसको निकालना है। सालवेज करना है, जिसे अंग्रेजी में कहते हैं। ये हालत है देश की। तो कैसे सुधरेगा ?

तो ये मैं कहना चाहता हूं कि हमारा लोकदल–कांग्रेस का जो संगठन है या गठबंधन है, हम लोगों ने तय किया है कि वो गांधी जी के रास्ते पर चलने की कोशिश करे। गांधी जी का ही बताया हुआ रास्ता था। उसको भूल गये कुछ लोग और देश बर्बाद हो गया। गांधी ने

दो बात कही थीं सीधी सी। अपना चलन तो था ही त्याग का उसके कहने की कोई जरूरत नहीं है। उनकी दो ही शिक्षा थीं। उन दो शिक्षा को हमारे लीडरान मानते तो आज देश इस अधोगति को प्राप्त नहीं होता।

जैसे मैं कहता हूं कि महत्माजी ने हजार बार कहा कि असली भारत–हिंदुस्तान गांव में रहता है, खेती करता है, तो खेती की पैदावार बढ़ाओ– ये उनका कहना था। खेती की पैदावार बढ़ जायेगी, गांव वाले मालदार हो जायेंगे। गांव वालों की जेब में पैसा आयेगा, बाजार से कुछ खरीदेंगे, तो उद्योग–धंधे वाले पैदा हो जायेंगे, तिजारत बढ़ जायेगी, मोटर चलने लगेंगी, कालेज और स्कूल बन जायेंगे, देश मालदार हो जायेगा। लेकिन पहली शर्त यह है कि खेत की पैदावार दूनी हो।

दोस्तों, आज दुनिया में ऐसे देश हैं जो आपके मुकाबले में दस–दस गुना पैदा करते हैं, एक बीघे से। हामरे यहां परमात्मा ने जमीन बहुत अच्छी दी है। बारिश भी बहुत ज्यादा होती है। उस जमीन में हम पानी का संग्रह कर सकते और इस्तेमाल कर सकते हैं, जब जरूरत हो, उससे नहर वगैरा निकाल सकते हैं। हमारे यहां सूरज की किरणें भी बहुत पड़ती हैं, जिससे कि जमीन, फसल पकती है। अगर देश की खेती का इंतजाम अच्छा करते हमारे लीडरान, तो हम आधी दुनिया को खिला सकते हैं। आधी दुनिया को अकेला भारतवर्ष खिला सकता है, दोस्तों! (तालियां) इतना अन्न कि बचने के बाद दूसरे देशों को खिला सकते हैं। आज हम अपने देशवासियों को नहीं खिला पाते; क्यों ?

सबसे बड़ी जरूरत थी पानी की, दूसरे नंबर खाद की, तीसरे नंबर बीज की। पानी का ये हाल है कि जब अंग्रेज गया था, तो 100 में साढ़े सत्रह बीघे आबपाशी होती थी, सिंचाई होती थी। आज कुल 24–25 बीघे में होती है और ये भी सारे सूबे, हिंदुस्तान का औसत है। पंजाब में 80 फीसदी रकबे में आबपाशी है, वहां की गवर्नमेंट किसानों के हाथों में रही है हमेशा। तुम्हारी नहीं रही उस तरह से। मैंने सुना है तुम्हारे यहां तो 100 में 8 बीघे में आबपाशी है।

आज सूखा पड़ा हुआ है, पंजाब में भी पड़ा है, हरियाणा में भी। राजस्थान में और मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा और बंगाल के भी पांच–छह जिलों में पड़ा हुआ है। 9 सूबों में पड़ा हुआ है, हमने 9 तारीख को उनके अफसरान को बुलाया था और कहा था कि जितनी मदद दे सकती है गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, वो देगी सबको।

लेकिन मैं आपसे ये कह रहा हूं कि पंजाब में 80 फीसदी रकबे में सिंचाई का प्रबंध है, लिहाजा सूखा होते हुए भी उनको कोई इतना कष्ट नहीं हुआ है। आपके यहां जमीन ज्यादा है, आदमी कम हैं बनिस्बत यू0पी0 के। यू0पी0 में एक–तिहाई रकबे में आबपाशी का इंतजाम है। लेकिन कष्ट उनको भुगतना पड़ेगा ज्यादा, क्योंकि तुम्हारे यहां 100 में 8 ही बीघे में सिंचाई का प्रबंध है। काश, 8 की बजाय 40 फीसदी रकबे में इंतजाम हो जाता। मध्य प्रदेश में और सारे देश के 40 फीसदी हिस्से में होता, बजाय 25 के, तो दोस्तों, एक साल नहीं, अगर एक फसल नहीं, दो फसल भी सूखा पड़ जाय, तब भी लोगों को कष्ट नहीं होता। (तालियां) तब भी नहीं होता। (तालियां)

खुशकिस्मती से सरदार पटेल था किसान का बेटा, वो गृहमंत्री हो गये थे हमारे कुछ दिन के लिए। परमात्मा ने जल्दी उठा लिया उन्हें। बीमार रहते थे अक्सर, 75 वर्ष की उम्र में सन् 50 में हमसे विदा हुए। पांच भाई थे। दस एकड़ जमीन थी बाप के पास और 1857 की

बगावत में उनके बाप ने हिस्सा लिया था। देशभक्त के बेटे थे। गरीब किसान, जैसे किसान गरीब होता है। मिडिल पास करने के बाद उन्होंने कहा, बल्लभभाई इनका नाम था, कि खेती करो, मेरे बस की नहीं है आगे पढ़ाना, खेती करो, हल उठाओ। उन दिनों मैं मिडिल पास होता था। तो दो साल उन्होंने खेती की। बड़े भाई थे विट्ठल भाई पटेल। उन्होंने पढ़ के वकालत शुरू की। जब उनकी कुछ आमदनी आई तो बाप ने कहा कि अब पढ़ने के लिए जाओ। तब उन्होंने बी0ए0 पास किया। आगे बहुत देश की सेवा की। और, पहली पंचवर्षीय योजना, उनके जमाने में बनी जिसमें अरबों रुपया –– वो जानते थे किसान की मुसीबतों को, तो 37 फीसदी रुपया उन्होंने खेत के विकास के लिए रखा। 100 में 37, और 5 रखा कारखानों के लिए, क्योंकि सबसे बड़ा उद्योग–धंधा तो हमारे यहां खेती ही थी। गांव में 80 आदमी रहते 100 में और 72 करते खेती। तो 37 रुपया रखा उसके लिए।

सन् 56 में जब दूसरी योजना बनी, सरदार के पटेल के चले जाने के बाद, तो खेती का रुपया 37 से घटाकर कर दिया गया 18। कारखाने का रूपया 5 से बढ़ाकर कर दिया गया 24। खेती की तरफ से लापरवाही। अन्न की जरूरत होगी, अमरीका से मंगा लेंगे। ये हमारे लीडरों की राय हुई। देश बर्बाद हो गया। गांव बर्बाद हो गये तो देश बर्बाद हो गया, ये है आज हालत।

तो हमने ये तय किया, हमारे लोकदल ने और हमारे कांग्रेस के साथियों ने कि हमसे जितना भी रुपया बचेगा और सब चीजों से बचाकर हम 40 फीसदी रुपया कम से कम खेती पर खर्च करेंगे। दोस्तों ! (तालियां) हम चाहेंगे कि हमारा हर गांव सड़क से मिल जाये, बड़ी सड़क से छोटी सड़क के जरिये। हम चाहेंगे कि हमारे बड़े–बड़े गांवों में सब में अस्पताल हो जायें। हम चाहेंगे कि हमारे जो हाईस्कूल कायम हों गांवों में, उनमें शिक्षा उतनी ही अच्छी हो, जितनी कि भिंड के स्कूल में या ग्वालियर के कॉलेज में होती है। आज गांव में जो स्कूल हैं उन पर गवर्नमेंट बहुत कम खर्चा करती है। वहां के पढ़े–लिखे लड़के शहर के पढ़े–लिखे लड़कों का इम्तहान में मुकाबला नहीं कर सकते हैं और इसलिए नौकरी में बिचारे नहीं आ पाते हैं।

तो, गांव की बिलकुल उपेक्षा हुई है। हम ये भी चाहेंगे–चूल्हे को बदलना। मैंने देखा अपने घर में देखा, जब मैं बात करता हूं गांव की या किसान की और गरीबी की, तो किसी पे एहसान नहीं करता। कोई पढ़ी–लिखी बात नहीं कह रहा हूं, स्वयं भुगती हुई बातें कह रहा हूं। हमारी बहू–बेटियां, जवान बहू–बेटियां तीन साल–चार साल के बाद, शादी के तीन–चार साल के बाद उनका सौंदर्य खत्म हो जाता है, चूल्हा झोंकते–झोंकते उनकी तंदरूस्ती खराब हो जाती है, आंखें खराब हो जाती हैं, उनके फेफड़े खराब हो जाते हैं (तालियां), हम इन चूल्हों को बदलना चाहते हैं जिससे कि इतना धुआं न निकले। और हम गोबर को बचाना चाहते हैं, जो बजाय चूल्हे के खेत के अंदर गोबर जाना चाहिए दोस्तों ! तब खेत की पैदावार बढ़ेगी। उसके लिए इंतजाम कुछ करना पड़ेगा। कोयला पहुंचाया जा सकता है बड़ी आसानी से। ऐसे दरख्त हैं कि अगर गवर्नमेंट चाहती केवल मेंड पर लग सकते हैं, जो छैल भी नहीं मारेंगे फसल को। उसकी पत्तियां कम होती हैं। मेंड पर पैदा हो जाता, कल्लर में पैदा हो जाता। सीधा ऊंचा जाता, लंबा चला जाता। ईंधन उसका मिल सकता था। लेकिन किसी को फिकर हो तब ? किसी को दुःख हो तब ? हमारे लीडरों की बहू–बटियों या माता या बहनों को चूल्हा झोंकना पड़ता हो तब ?

बड़े कारखाने लगायें बिजली पैदा करने के लिए, फौलाद पैदा करने के लिए, रेल का इंजन बनाने के लिए, थोड़ी–बहुत जरूरत हो मोटर बनाने के लिए, बेशक बड़े कारखाने लगाये जायें। लेकिन जो काम हाथ से हो सकता है, उसको हाथ से करो, क्योंकि हाथ से जब काम होगा तो ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा और कोई पूंजीपति पैदा नहीं होगा।

पैदा हुआ था एक राजा की रियासत के दीवान के घर, मालदार घर में महात्मा गांधी, बैरिस्टरी करके आया था और फकीर होकर चरखा और करघा हाथ में उठा लिया। ये बताने के लिए कि अमरीका की नकल मत करना। अमरीका में आबादी कम, जमीन हमसे कई गुना ज्यादा है। लोहा, कोयला और तेल ज्यादा है। वहां बड़े कारखाने होंगे, बड़े फार्म होंगे। हमारे यहां जमीन कम, कोयला, तेल और लोहा कम आदमियों को देखते हुए, लिहाजा हमारे यहां छोटी–छोटी जमीन होगी लोगों पर। बीस–बीस, पच्चीस–पच्चीस बीघे या चालीस बीघे ज्यादा से ज्यादा और हमारे यहां दस्तकारी होगी। बड़े कारखानों के अलावा जो भी काम हाथ से हो सकता है, सब हाथ से किया जाये। चरखा ले के बैठो। लेकिन उनके चले जाने के बाद कांग्रेस वाले जो उनके सामने चरखा चलाते थे और हाथ से सूत कातते थे और खद्दर पहनते थे, उन्होंने 300–400 कारखाने लगा दिये कपड़ा बनाने के – सेठों के, बिरला के, टाटा के और लोगों के।

अब गवर्नमेंट की एक रिपोर्ट है 1953 की, जिसमें लिखा है कि बड़े कारखाने में एक मजदूर जितना कपड़ा पैदा करता है, उसको हाथ से पैदा करने में बारह आदमी लगेंगे करघे पर। तो हमारा इरादा है, सुन लो ध्यान देकर, अगर हमारी बात चल गयी और आपने दिल्ली की जिम्मेदारी हमारे और हमारे साथियों के सुपुर्द की और मेरे साथी राजी हो गये, तो मैं उन सब कारखाने के मालिकों को, जो कपड़ा कारखाने में बना रहे हैं या और काम कर रहे हैं, जो हाथ से हो सकता है, उनको ये हुकुम दूंगा कि कारखाने तुम्हारे बंद तो नहीं होंगे, चलाओ; लेकिन तुम्हारा माल हिंदुस्तान से बाहर बिकेगा, तुम हिंदुस्तान में अपना माल नहीं बेच सकोगे (तालियां)। हाथ से कपड़ा बनेगा, हाथ से दियासलाई बनेगी, हाथ से कालीन बनेगा, हाथ से साबुन बनेगा, हाथ से जूता बनेगा बजाय कारखानों के। ताकि ज्यादा लोगों को रोजगार मिले। औलाद हमारी बढ़ेगी, फिर कहता हूं, चाहे तेज रफ्तार से चाहे कम रफ्तार से, लेकिन जमीन हमारी बढ़ने वाली नहीं है।

तो दोस्तों, ये हमारा इरादा है गांव को उठाने का। इसीलिए मेरे जन्मदिन पर 77 लाख रूपये इकट्ठे हुए थे, जब मेरी 77वीं वर्षगांठ अभी मनाई गई – 23 दिसम्बर सन् 77 को। आपके यहां से भी मैंने सुना हजारों आदमी गये थे या सैकड़ों आदमी गये थे। तो, 77 लाख रूपये का हमने ट्रस्ट बना दिया है एक, और उसमें अखबार निकालना शुरू किया है। जितने अखबार हैं, कोई गांव वालों की समस्या का जिक्र नहीं करता है। ये कत्ल है, ये उसने गाली दी है, ये उसने व्याख्यान दिया है, लेकिन गाय का दूध कैसे बढ़े, खेत की पैदावार कैसे बढ़े, पानी का इंतजाम क्या हो, गांव वालों की हालत कैसे सुधरे ? कोई अखबार ऐसे लेख नहीं लिखता। लिहाजा मैंने अखबार निकाला है एक। उसका अंग्रेजी में भी है एक साप्ताहिक, हिंदी में भी है। अंग्रेजी वाले का नाम रखा मैने 'रीयल इंडिया', और हिंदी वाले का नाम रखा हमने 'असली भारत'। तो वो अखबार आप मंगाना शुरू करना धीरे–धीरे। बहुत अच्छा अखबार होने वाला है – तालियां ––। उसमें गांव वालों की सब समस्याओं का जिक्र होगा। अध्ययन के बाद उसमें लेख लिखे जायेंगे, गांव वालों की हालत कैसे सुधरे।

दोस्तों, हमने सन् 74 में एक पार्टी बनायी थी, बल्कि कोशिश की थी भारतीय लोकदल बनाने की। हमने 'कांग्रेस' छोड़ दी सन् 66 में और 'भारतीय क्रांतिदल' नाम रखा। 74 में फिर हमने कोशिश की कि सब पार्टियां जो कांग्रेस के मुखालिफ हैं इकट्ठी हो जायें। बहुत–सी चार–पांच पार्टी इकठ्ठी हो गयी। जनसंघ और एक सोशलिस्ट पार्टी है छोटी–सी, वो उसमें शामिल नहीं हुई और न मोरारजी भाई की एक छोटी–सी कांग्रेस है, वो राजी हुई। हमने इनको बहुत समझाया। नहीं मानते थे। मैं ये कहता था कि मिलकर एक जबरदस्त पार्टी बनाओ, कांग्रेस के खिलाफ बनाओ, तब जा के मुल्क चलेगा, जब बराबर की दो पार्टी हों। कांग्रेस का 30 साल से बराबर राज चल रहा है। ये मस्त हो गये हैं, भूल गये हैं गांव वालों को, करप्ट हो गये हैं, रिश्वत लेने लगे हैं, क्योंकि उनको निकालने वाला कोई नहीं रह गया है, उनका ये ख्याल है, मैं कहता हूं कि एक वैकल्पिक साधन पैदा करो– देश के स्तर पर एक बड़ी पार्टी।

मैंने इन लीडरों से भी कहा। मोरारजी देसाई से कहा, अटल बिहारी वाजपेयी से कहा और बालासाहब देवरस हैं, एक इनके बड़े लीडर आर0एस.एस0 के, उनसे भी मेरी घंटे भर कानपुर में बात हुई 18 अक्टूबर सन् 74 को कि सब मिलकर हरा सकते हैं कांग्रेस को। अकेले–अकेले नहीं हरा सकते। लेकिन कोई राजी नहीं हुआ। मेरा कहना ये था कि नाम पार्टी का कुछ ही रख लो, निशान कुछ ही रखो, झंडा कुछ ही रखो, लीडर किसी को बनाओ। केवल मेरी एक शर्त है कि महात्मा गांधी ने जो प्रोग्राम बनाया था देश को उठाने का, उस प्रोग्राम को स्वीकार कर लो, तब जा के देश का काम चलेगा।

किसी ने मेरी बात को माना नहीं। नतीजा यह हुआ कि इमरजेंसी लग गयी। एक लाख दो हजार आदमी जेल में डाल दिये गये। उस वक्त जनसंघ के, सोशलिस्ट पार्टी के लोग जब जेल में पहुंच गये, तब राजी हुए। एक मोरारजी इतना जिद्दी आदमी है तब भी नहीं तैयार हुआ। जब छूट गये 18 जनवरी को, तब जाके तैयार हुआ। और फिर हमारे लोगों ने कहा कि मोरारजी को बनाओ चेयरमैन। हमने कहा चलो बना दो चेयरमैन। इलेक्शन लड़ा, सारा उत्तरी भारत मेरे सुपुर्द हुआ। और सारा दक्षिण महाराष्ट्र, गुजरात के समेत चार राज्य दक्षिण के छः राज्य छः सूबे उनके सुपुर्द हुए। वो वहां से कुल लाये 65 सीट इन छः सूबों से और हमने अमृतसर से लेकर कलकत्ते तक सारी कांग्रेस का सफाया कर दिया, जैसा कि दुनिया में कभी हुआ नहीं था दोस्तों! (तालियां)

आप सबने कांग्रेस के खिलाफ वोट देकर उन सब लोगों को जिता दिया, जिसका नाम जनता पार्टी हमने रखा था। अब लीडर बनने की बात हुई, तो जैसे ही 20 मार्च को इलेक्शन खत्म हुआ, मैं बीमार होकर अस्पताल पहुंच गया। मेरे पास अटल बिहारी वाजपेयी पहुंचते हैं जनसंघ के लीडर और सोशलिस्ट पार्टी के लीडर एन0जी0 गोरे और कहते हैं कि हम जगजीवनराम को पी.एम. बनाना चाहते हैं। मैंने कहा इसलिए कि इमरजेंसी का प्रस्ताव पेश किया, इसलिए इनाम देना चाहते हो क्या ? 25 जून को इमरजेंसी घोषित हो चुकी थी, हम लोग सब जेल भेजे जा चुके थे, कानूनी शक्ल देने के लिए 21 जुलाई को विधेयक पेश किया गया पार्लियामेंट में। गृहमंत्री नहीं थे जगजीवनराम, फिर भी इन्होंने उसे पेश किया, इंदिरा को खुश करने के लिए वो प्रस्ताव कि इमरजेंसी लागू की जाये, लोगों की आजादी छीन ली जाये बजाय अदालत में भेजने के।

मैंने कहा इस शख्स ने जब देखा कि इंदिरा इससे खुश नहीं है, इसको टिकट नहीं देने वाली हैं, जब चुनाव होने लगे 77 में, तो ये कांग्रेस को छोड़कर आये। इसने एक छोटी–सी पार्टी बना ली और आप उसको बनाना चाहते हो, इसलिए कि उसने प्रस्ताव पेश किया था। मैंने कहा और बात नहीं करना चाहता हूं, निजी बात, जगजीवनराम की बात किसी से छिपी नहीं है। अटलजी से मैंने कहा कि बड़ी हिंदू संस्कृति की बात करते हो, इस प्रकार के आदमी को लीडर बनाना पसंद करती हैं आपकी हिन्दू संस्कृति ? देश ऐसे लोगों से उठेगा क्या ? (तालियां) मैंने कहा, दुनिया तुम्हारे जनम पे थूकेगी, जब उसको लीडर लेकर चलोगे तुम। वो प्राइम मिनिस्टर होगा। 150 आदमी कांग्रेस के फिर भी जीत के आ गये, 550 में से, जब तुम इंदिरा की आलोचना करोगे और ये कहोगे कि इसने इमरजेंसी लगाकर पाप किया था, तो लोग कहेंगे कि जिसने इमरजेंसी का प्रस्ताव पेश किया था, वो आपका प्राइम मिनिस्टर बैठा है। आपका क्या मुंह है हमारी शिकायत करने का (तालियां)। तब जाकर उनकी अकल में आयी। मैंने कहा कि मैं हरगिज, हरगिज जगजीवनराम जी के लिए तैयार नहीं (तालियां)।

मैं जानता हूं कि मोरारजी बड़े आदमियों के असर में हैं, लखपतियों और करोड़पतियों के। मैं जानता हूं गरीब की बात, मेरी और उनकी बातों में फर्क होगा। मैं जानता हूं उनको किसान से और गरीब से कोई हमदर्दी नहीं है। लेकिन सिर्फ दो बात की वजह से मैं इस आदमी के मुकाबले में उसे पसंद करूंगा कि 19 महीना जेलखाना काटा है ओर उम्र में मुझसे सात साल बड़े हैं। चिट्ठी लिख दी जय प्रकाश नारायण जी को और आचार्य कृपलानी जी को उन दिनों वो दिल्ली आये हुए थे कि मेरे और मेरे साथियों के वोट मोरारजी के लिए। इसलिए मोरारजी प्राइम मिनिस्टर हुए और जगजीवन राम ने घोषणा कर दी कि ये हरिजनों का दुश्मन है, क्योंकि हरिजन को इसने प्राइम मिनिस्टर नहीं बनने दिया।

मेरे सामने दोस्तों, हरिजन गैर–हरिजन का सवाल नहीं था, मैं उसको प्राइम मिनिस्टर इसलिए नहीं बनने दिया क्योंकि उसने आपात्कालीन स्थिति का प्रस्ताव पेश किया था, इमरजेंसी लगायी थी, अब अपने स्वार्थ के लिए, अपना स्वार्थ देखकर, कांग्रेस को छोड़कर आया था, हम में मिलने के लिए। मैंने कहा नहीं, हरगिज नहीं (तालियां)।

मैंने हरिजनों के लिए जितना किया है, मेरे पास बताने को वक्त नहीं है। लेकिन मैं ये बिलाखौफ तरदीद कहने के लिए तैयार हूं कि अपने ये जो गरीब भाई हैं, कि ये जो हजारों वर्ष से अपने को ऊंची जाति के कहने वाले हिंदओं ने इनके साथ जो अन्याय किया है, मैंने हिंदुस्तान में किसी भी मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर से ज्यादा इनकी खिदमत की है बनिस्बत किसी और के। लेकिन ––(तालियां) –– आज मेरे पास समय नहीं।

उधर मेरार जी हो गए लीडर, प्राइम मिनिस्टर के बजाय बन गए डिक्टेटर। अपने आदमी सब भर लिये मिनिस्ट्री में और जब 25 लाख आदमी 23 दिसम्बर सन् 77 को पहुंचे दिल्ली में किसान, सारे हिंदुस्तान के और 50 लाख से ज्यादा पहुंचे 78 में तो, उनके हृदय पर सांप लोट गया ईर्ष्या का कि चरण सिंह इतना जनप्रिय है। इसने एहसान किया है मुझे प्राइम मिनिस्टर बनाकर, इसका एहसान उतारना है। एहसान उतारा ये कि हमारे तीन चीफ मिनिस्टर थे, उनको निकाला। बिहार में थे कर्पूरी ठाकुर– एक नाई के घर पैदा हुआ था। हमारी पार्टी के लीडरान ज्यादातर गरीब लोग हैं, गरीब घरों में पैदा हुए हैं। उसका बाप आज भी नाई का काम करता है, ऐसा लीडर है वो कर्पूरी ठाकुर। उसको भी चीफ मिनिस्ट्री से हटवाया जनसंघ ने और मोरारजी ने मिलकर। रामनरेश यादव को हमने यू0पी0, हिंदुस्तान के

सबसे बड़े सूबे का चीफ मिनिस्टर बनाया था, हमारे हाथ की बात थी यू0पी0 में– उसको निकाला। देवीलाल, एक किसान का बेटा है हरियाणे में, उसको निकाला। राजनारायण को मिनिस्ट्री से हटाया, मुझको भी हटाया था। राजनारायण को वर्किंग कमेटी से भी निकाल दिया। ये तो सब मिनिस्ट्री से निकाले गए, हमारे लोग जो आगे चुनाव होने वाला था जनता पार्टी का, इलैक्शन की जो कमेटियां बनी थीं, उसमें लोकदल के लोगों को नहीं रखा गया। केवल यू0पी0 में एक या दो एक आदमी रखे गये।

इरादा था हमारा एहसान उतारने का। एहसान उतारने को कहानी सुनाये देता हूं। तुम धूप में तो बैठे ही हो। हापुड़ के पास एक गांव है, मेरे पिताजी सुनाया करते थे और दिल्ली के पास के गांव के दो लोग आए गंगाजी नहाने के लिए गढ़मुक्तेश्वर। पहले पूर्णिमा को जाया ही करते थे सब हिन्दू लोग और नंगे पैर पैदल आए। एक दिन में, दिल्ली से पहुंच गए हापुड़ के पास वो एक गांव है। रात को वहां ठहरे एक चौधरी साहब के यहां। उन्होंने खातिर की। दूध पिलाया। सुबह चले गऐ गढ़मुक्तेश्वर। एक दिन का वो रास्ता है और जब लौटकर आए, फिर उसी के यहां ठहरे और उन्होंने अपने खिड़क में, अपने घेर में सुला लिया उनको, जहां बैल बंधे हुए थे उनके। और वो घर का मालिक किसान किसी और जगह सो गया। खुशहाल आदमी मालूम होता था। तो इन दोनों दोस्तों ने ये तय किया जो दो आदमी आए थे वहां से दिल्ली के पास एक गांव से, हमारी तो चौधरी ने बड़ी खातिर की है, इसका एहसान उतारना चाहिए, कैसे ? तो उसके दो बैल ये बड़े अच्छे खूबसूरत, उनको उठाकर, खोलकर ले गये। अब सुबह जब आया चौधरी अपनी खिड़क में अपने घेर में, जहां बैल बंध रहे थे, तो चौड़ा पाया उसने। उसने कहा, ओ हो, हो न हो वो लोग ले गए। उन दिनों बैलों की चोरी काफी होती थी।

मोरारजी का नाम लेना नहीं चाहता हूं, ठीक नहीं रहेगा (हंसी)। अच्छा, तो उनसे पहले ही गांव पूछ लिया था चौधरी साहब ने। तो पहुंचे उनके गांव– कू के भई, वो हमारे तो दो बैल खुल गए। नू कहे, अच्छा, हम तो चौधरी छोड़के आए थे दोनों बैलों को बंधे हुए उस वक्त। नू के जी आपको कहां, आप कैसे जाने, लेकिन साहब मेरी मदद करो किसी तरह उनको ढुंढवाओ। नू कहे, अच्छी बात है, ढूंढेंगे। अब 15 दिन बाद वो चौधरी फिर पहुंचा। नू के पता तो लग रहा है, पर बहुत ही बदमाश आदमी हैं, जरा हम और पक्की कर लें बात। 15 दिन बाद वो फिर पहुंचा बैलों का मालिक। नू के जी पता तो लग गया, पूरा हमारा यकीन हो गया, पर क्या करें कोई बात कहने की है नहीं। हमें तो शर्म आती है। ने के जी बात तो बताओ। नू के बात ये है कि वो 100 रू0 की फिरौती मांग रहा है। आप समझ गए, फिरौती जानो हो नहीं ? अब बिचारे ने 100 रू0 की फिरौती दे दी। 500 रू0 के बैल होंगे, आज तो आते हैं वो 5000 में। तो देखा, एहसान उतार दिया ना, जो खाना–वाना खाया था, खातिर की थी और 100 रू0 ले लिए।

तो मोरारजी ने कहा कि इस शख्स ने मुझको बनवाया प्राइम मिनिस्टर, इस चरण सिंह का एहसान उतारना है किसी तरह ? तो यह उतारा उसने एहसान। हमको बर्बाद करने में। और 26 जून सन् 79 को, अभी पांच महीने पहले अखबार वालों ने पूछा कि आपने निकाल दिया था उनका वर्किंग कमेटी से और राजनारायण को, उन्होंने पार्टी छोड़ दी ? लोकदल के अगर और लोग छोड़े तो क्या होगा ? नू के छोड़ दो, अगर सारे छोड़ दें, कोई हर्ज नहीं, मेरी पार्टी मजबूत हो जाएगी, मेरी गवर्नमेंट मजबूत हो जाएगी।

मेरे साथियों ने कहा, चौधरी साहब, आपने ये पार्टी बनायी, हम सब लोगों ने कोशिश की। आपने इनको चेयरमैन भी बना दिया और इसके बाद प्राइम मिनिस्टर बना दिया था। अब हम सब को निकाल दिया है और ये कहते हैं कि लोकदल के सभी चले जाएं तो कोई हर्ज नहीं, पार्टी मजबूत हो जाएगी। अब हम पे इससे ज्यादा नहीं सहा जाएगा–– ले आये अविश्वास का प्रस्ताव। मेरे साथियों ने कहा कि अब हमको इजाजत दीजिए, हम ज्यादा नहीं रह सकते, हम और ज्यादा जलील होना नहीं चाहते हैं।

इस तरह पार्टी टूटी। इसको कहते हैं कि हमने दल बदला, नहीं। कानून जो पेश हुआ पार्लियामेंट में मई, 79 में, जो विधेयक है, जब मैं होम मिनिस्टर था, जब कमेटी बनी थी, उसमें ये तय हुआ था कि चौथाई आदमी से कम अगर पार्टी को छोड़े तो माना जाएगा–डिफैक्शन, और चौथाई छोड़े या चौथाई से ज्यादा छोड़े तो पार्टी का विभाजन होगा। हम 299 आदमी पार्टी के थे, हमने 97 ने छोड़ा, एक–तिहाई ने, लिहाजा जो आदमी कहता है कि हम डिफैक्टर रहे, हमने दल बदला है, वो बेईमान है। झूठ बोलता है– ये मैं कहना चाहता हूं (तालिंया)। तो सब तरह से पार्टी टूटी। हमने तोड़ी, इसलिए कि हमको मजबूर कर दिया आज कि बाइज्जत तरीके से नहीं रहें।

आपके सामने चुनाव होने जा रहा है। अब आपको तय करना है कि किसको वोट देने हैं। तो दोस्तों, हमने अभी दो महीने के अन्दर गन्ने के दाम बढ़ा दिए हैं। पहले 10 रूपये फी क्विंटल गन्ने के दाम थे। हमने तय कर दिया कि साढ़े बारह रू0 से कम नहीं होंगे और मेरठ के अन्दर जहां गन्ना बहुत अच्छा पैदा होता है, एक इलाके में, उसे 15 रू0 फी क्विंटल फैक्टरी से इस वक्त मिल रहा है (तालियां)। धान के दाम पहले 85 रू0 फी क्विंटल थे, हमने 95 रू0 फी क्विंटल कर दिया। गवर्नमेंट जो खरीद करेगी। साथ ही ज्वार के दाम भी पहले 85 थे, धान के बराबर, वो भी 85 हो गए। अब तक मोरारजी के सामने 225 रू0 फी क्विंटल कपास के दाम थे, हमने उसको 275 रू0 कर दिया, 50 रू0 उसके बढ़ा दिए। अन्य चीजों के भाव बढ़ रहे थे पहली गलतियों के कारण, तो हमने एक ऑरडिनेंस– अध्यादेश जारी किया कि जो दुकानदार अपने घर के अन्दर माल रखते हुए या डीजल ऑयल अपने यहां रखते हुए, किसानों को, गरीबों को नहीं देता है और दुगने–चौगुने दाम मांगता है, तो गवर्नमेंट चाहे सूबे की हो, उसको जेल भेज सकती है, और जेल भेजे जा रहे हैं। अब आपने देखा कि भाव जो बढ़ रहे थे वो रुक गए, लेकिन आपके मध्य प्रदेश के, जनसंघ के चीफ मिनिस्टर ने यह तय किया कि हम इस कानून को लागू नहीं करेंगे, ये उनको अधिकार था। क्यों ? (तालियां)। बेईमान दुकानदारों के दोस्त, बेईमान मुनाफाखोरों के दोस्त। सब लोगों का पहला ख्याल था कि जनसंघ पार्टी दुकानदारों की है, गरीबों की नहीं है, गांव वालों की नहीं है, किसानों की नहीं है, बल्कि किसानों से बैर है। अब साबित उन्होंने कर दिया। अटल बिहारी वाजपेयी ने ये कहकर कि ये आर्डिनेन्स नहीं लानी चाहिए थी, बल्कि उल्टा ये कहते हैं साहब, कि मैं सत्याग्रह करूंगा इस अध्यादेश के खिलाफ, जो बेईमान दुकानदारों को पकड़ने का हमने हुकुम जारी किया। ठीक है, अगर जब वो सत्याग्रह करें दिल्ली में, हिम्मत नहीं है, अगर करें दिल्ली में, तो ये रमाशंकर से कह रहा हूं कि इनके साथ 100 आदमी माला लेकर चले जाना कि बड़ा पुण्य का काम कर रहे हैं आप, जरूर जेल जाओ, इस काम में, बेईमानों की मदद में।

ये है, साहब, जनसंघ। कांग्रेस को मैं बता ही चुका हूं। इसके नेता मोरारजी भाई और इंदिराजी को मत भूल जाना, बड़ी चालबाज महिला है। वो बहन लगती है हमारी रिश्ते में,

क्योंकि लीडर की बेटी थी। लेकिन बड़ी चालाक है, बड़ी ही चालाक। सिवाय झूठ बोलने के और दूसरा काम उसको नहीं आता। सच वो सारी उमर नहीं बोली है। सच न बोलने की कसम खाई हुई है। आज तक ये कहती रही है कि मैंने ठीक इमरजेंसी लगाई थी। अगर फिर आपने उसको गलती से मालिक बना दिया देश का, तो अब के कोड़े लगवाएगी। ये बात जरूर है कि कोड़े मुझको ज्यादा लगेंगे हमको चार–पांच को, लेकिन नम्बर तुम्हारा भी आएगा, बतलाए देता हूं।

और अखबारवालों के पहले नकेल डाल दी थी। अब भी कहती है कि मैं अब भी नकेल डाल दूंगी लेकिन आज अखबार में मैंने पढ़ा है कि मुजफ्फरपुर एक जिला है बिहार में, वहां श्रीमती जी गई हैं और श्रीमती जी ने किसानों से ये कहा है कि मझे अपनी बेटी समझकर माफ कर देना। आज अखबार में छपा है। माफ ही मत करना, बाताए देता हूं किसानों! बाद में मारे जाओगे तुम, मारे जाओगे बतलाए देता हूं। बस, इन शब्दों के साथ मैं अपने कथन को समाप्त करता हूं और आप धूम में बैठे हो इसके लिए मैं आपको बहुत–बहुत – क्या – क्या

(शोर– नू कह रही हैं सूखे के लिए कुछ नहीं कहा)

हां, सूखे के लिए अभी मैं कहकर आया हूं, और ये चीफ मिनिस्टर आपके सकलेचा मुझसे मिले थे। मैंने कहा, तुम ये प्रचार कर रहे हो क्योंकि सेंटर की गवर्नमेंट मध्य प्रदेश के लोगों को कुछ नहीं देना चाहती। नू कहते हैं कि नहीं, मैं तो नहीं कह रहा। मैंने कहा, सब अखबार वाले मुझसे कह रहे हैं कि तुम लोगों को ये बतला रहे हो कि केन्द्र की गवर्नमेंट, चरण सिंह के हाथ में हैं और वो हमारी मदद नहीं करता, क्योंकि हम जनसंघ की गवर्नमेंट हैं। बोले कि नहीं ? लेकिन झूठ बोलते हैं। मैं जानता हूं सब जगह ये लोग यह कह रहे हैं कि केन्द्र की गवर्नमेंट, दिल्ली की गवर्नमेंट हमको मदद नहीं करती। मैंने दोस्तों, ये कहा कि झूठ, हमने ये कहा था पहले और अभी 9 तरीख को सूबे अफसर बुलाए थे, 9 सूबे के अफसर बुलाए थे, जहां सूखा पड़ा है और सबसे कह दिया था जो भूखे लोग हों, जो गरीब हों जिनके पास पैसा नहीं है, अन्न खरीदने के लिए, उनसे कुछ काम करवा लो सार्वजनिक और उसके लिए जितने अन्न की जरूरत पड़ेगी, एक लाख टन की, दो लाख टन की, गवर्नमेंट आपको देगी। हमारे पास इत्तफाक से अन्न की कमी नहीं है। अन्न की कमी के कारण हिन्दुस्तान में दिल्ली की गवर्नमेंट एक आदमी को भूखा नहीं मरने देगी।

हमारे सामने सवाल है पानी का कि पानी हम कहां से लाएं ? पथरीली जमीन में कुआं खोदने के लिए चाहिए रिग, मशीन। तो हमारे पास दो–तीन महकमें थे, जिनके पास रिग होती है। उनसे हमने कहा, लेकिन वो रिग ऐसी है कि वो जल्दी से कुआं नहीं खोद सकती है। तो जो हमारे राजदूत दूसरे देशों के अन्दर गए हैं, उनसे हमने कहा कि जितनी भी रिग, जितनी मशीन पथरीली जमीन को खोदकर पानी निकालने की क्षमता रखती हैं, उन सब को खरीदो और जल्दी से जल्दी हिंदुस्तान भेजो। दोस्तों, एक अखबार वाला आज मुझसे बोला, जरूर जनसंघी होगा, कि चौधरी साहब लोग यह कह रहे हैं कि जब से आप आए हैं, तब से सूखा पड़ा है (हंसते हुए)। मैंने कहा, आप क्या कहते हैं? नहीं, नहीं, मैं तो नहीं कह रहा। बेईमान लोग झूठे प्रचार हमारे खिलाफ करते हैं।

तो महात्मा गांधी की हत्या हुई जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल के रहते हुए। और जिन्होंने की, उनका भी अंदाज लगा लो। तो क्या जवाहर लाल ने सरदार पटेल ने महात्मा गांधी की हत्या कराई थी क्या ? ऐसा प्रचार!

मैं एक बात और कहना चाहता हूं आपसे और बात खत्म कर दूंगा। इंदिरा तो अकेली डिक्टेटर है और ये आर0एस0एस0 संगठन ही डिक्टेटर है। इंदिरा तो आज नहीं कल, कल नहीं, परसों मर जाएगी, जैसा हम सब को मरना है, लेकिन संगठन मरता नहीं है, ये इससे ज्यादा जहरीला जानवर है जिसका नाम है– आर0एस0एस0, भूल मत जाना। गलती मत करना, किसानों का खास तौर से दुश्मन। जो बिरादरियां पेशा करती हैं खेती का, उनको नहीं पसन्द करता है। पहली बात तो हिन्दू और मुसलमान में भेद करता है। हम नहीं भेद करते हैं, जितने हमारे हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं, हमारा बर्ताव सब के लिए बराबर होगा, सब को बराबर हक होगा। हिन्दू राष्ट्र की बात करता है आर0एस0एस0। हिन्दू राष्ट्र में एक या दो बिरादरी का राज चाहता है वो। हरिजनों के साथ भी उनको कोई हमदर्दी नहीं है। वो जन्मगत बिरादरी में विश्वास करते हैं। मैं और मेरे साथी स्वामी दयानन्द के अनुयायी हैं ज्यादातर, हम जनमगत बिरादरी में विश्वास नहीं करते बल्कि जाति को तोड़ना चाहते हैं, तभी आपस के तफरके मिटेंगे, ये आपको बतलाए देता हूं।

इन शब्दों के साथ दोस्तों, बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं भी थक गया हूं। मेरे साथ तीन नारे लगा दो, तब मैं आपसे इजाजत चाहूंगा जाने की –

भारत माता की जय हो– भारत माता की जय हो।

महात्मा गांधी की जय हो– महात्मा गांधी की जय हो।

लोकदल कांग्रेस की जय हो– लोकदल कांग्रेस की जय हो।

नमस्ते लो मेरी आप।

––––––––––